2 दिसम्बर 2007, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

दृष्टि के अन्तर्मुख होते ही समस्त शुभभाव के विकल्पजाल प्रलय को प्राप्त हो जाते हैं।

ह्न मैं कौन हूँ ? पृष्ठ - 16

वर्ष : 30, अंक : 17 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

दिसम्बर (प्रथम), 2007 प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न

अहमदाबाद (चैतन्यधाम) : यहाँ दिनांक 20 से 26 नवम्बर, 2007 तक नेमिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का भव्य आयोजन अनेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर प्रतिदिन ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के ग्रंथाधिराज समयसार के सार पर हुए मार्मिक प्रवचनों के अतिरिक्त डॉ. उत्तमचंदजी जैन सिवनी, पण्डित शैलेषभाई शाह तलोद, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित मीठालाल दोशी हिम्मतनगर, पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा इन्दौर के विविध विषयों पर प्रवचन हुये।

दीक्षा कल्याणक के प्रसंग पर पण्डित हेमंतभाई गाँधी के प्रवचन का लाभ भी मिला। मुनिराज नेमिनाथ को प्रथम आहार देने का सौभाग्य श्री निमेषभाई हितेनभाई शाह एवं अनंतरायभाई शेठ परिवार को मिला ।

नेमिकुमार के **माता-पिता** बनने का सौभाग्य श्रीमती चंपाबेन व पण्डित चंदूलाल मेहता को मिला। **सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी** श्री अश्विनभाई कोटड़िया व श्रीमती जागृतिबेन कोटड़िया, **कुबेर इन्द्र-इन्द्राणी** श्री निखिलकुमार मेहता व श्रीमती जिज्ञाबेन मेहता थे।

प्रतिष्ठा महोत्सव के सम्पूर्ण कार्यक्रम प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री, सनावद के कुशल निर्देशन में सम्पन्न हुये। सहयोगी प्रतिष्ठाचार्य ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर, पण्डित मधुकरजी जलगांव, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा एवं पण्डित ऋषभजी शास्त्री छिंदवाड़ा थे।

इस अवसर पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रमों की शृंखला में कुन्दकुन्द का वैराग्य, सौराष्ट्र के नवरत्न एवं विराधना का फल आदि नाटकों के साथ अन्य अनेक सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दी गई।

महामहोत्सव में श्री अमृतलाल चुन्नीलाल मेहता, श्री रमेशचन्द वाडीलाल शाह, श्री रजनीभाई मीठालाल दोशी, श्री निखिलभाई जशवंतलाल मेहता, श्री अश्विनभाई हेमंतभाई परिवार, श्री सतीषकुमार मेहता, श्री राजेशभाई नानुभाई जवेरी, श्री सेवंतीलाल अमृतलाल गांधी, श्री मीठालाल मगनलाल दोशी, श्री नवनीतकुमार चंदुलाल घडिया, श्री दिलीपभाई जयंतिलाल शाह आदि का सक्रिय सराहनीय योगदान रहा।

इस अवसर पर लगभग 33 हजार 500 रुपये का सत्साहित्य तथा 9हजार 750 घंटों के सी.डी.प्रवचन घर-घर पहुँचे।

मुकुन्दभाई खारा का अभिनन्दन

देवलाली : यहाँ दीपावली के अवसर पर आयोजित शिविर के दौरान पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली एवं श्री दि. जैन मुमुक्षु मण्डल मुम्बई के तत्त्वावधान में दिनांक 7 नवम्बर को मुमुक्षु समाज के जाने-पहिचाने सक्रिय कार्यकर्त्ता, गुरुदेवश्री द्वारा प्रसारित तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार में तन-मन-धन से सक्रिय योगदान देनेवाले 83 वर्षीय श्री मुकुन्दभाई मणिलाल खारा का सार्वजनिक अभिनन्दन एवं सम्मान समारोह स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट सोनगढ के ट्रस्टी चिमनभाई ठाकरसी मोदी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने अपने उद्बोधन में कहा कि यह अवसर सर्वाधिक प्रसन्नता का इसलिये है क्योंकि सोनगढ़ ट्रस्ट के ट्रस्टी चिमनभाई ठाकरसी की अध्यक्षता में आदरणीय मुकुन्दभाई का सम्मान होने जा रहा है। मुझे उस दिन की प्रतीक्षा है जब सोनगढ़ में मुकुन्दभाई की अध्यक्षता में चिमनभाई ठाकरसी मोदी का सम्मान होगा और उसमें हम सब उपस्थित होंगे। चिमनभाई एवं मुकुन्दभाई ने अनेक दशाब्दियों तक कंधे से कंधा मिलाकर काम किया है, कुछ दिन से हुये बिछोह को आज फिर हम एक स्टेज पर देख रहे हैं। यह हमारे मुमुक्षु समाज की एकता के लिये मील का पत्थर साबित होगा।

श्री मुकुन्दभाई खारा का मुमुक्षु समाज की देश-विदेश में कार्यरत प्रमुख 40 विभिन्न संस्थाओं ने स्मृति चिन्ह, शॉल, श्रीफल आदि भेंटकर सम्मान किया साथ ही सर्वश्री कांतिभाई मोटानी, भरतभाई, बीनूभाई, उल्लासभाई, सुरेशभाई, प्रकाशभाई एवं ब्रह्मचारी बहिनों ने भी श्री मुकुन्दभाई खारा का सम्मान किया।

समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में श्री हसमुखभाई वोरा, ट्रस्टी श्री जीतूभाई बी.शाह सोनगढ़ के साथ ही श्री नेमिशभाई शाह, श्री अनंतराय ए. सेठ, श्री अतुलभाई खारा अमेरिका, श्री रसिकभाई डगली, श्री बसंतभाई एम. दोशी, श्री नगिनभाई मुम्बई, श्री प्रवीणभाई वोरा मुम्बई, श्री सुमनभाई आर.दोशी राजकोट, श्री पूनमचंदजी लुहाड़िया अजमेर, श्री विपिनभाई वाघर जामनगर, श्री अशोक बड़जात्या इन्दौर, श्री प्रभाकरभाई कामदार इटली, श्री संदीपभाई लक्ष्मीचंदभाई लंदन, श्री अमृतभाई फतेपुर आदि विशिष्ट अतिथि मौजूद थे।

इस अवसर पर आदरणीय युगलजी कोटा, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल जयपुर, विमलकुमारजी दिल्ली, पवनकुमारजी अलीगढ, प्रदीपजी झांझरी उज्जैन इत्यादि अनेक महानुभावों के शुभकामना संदेश भी प्राप्त हुये। कार्यक्रम का संचालन श्री कान्तीभाई मोटाणी मुम्बई एवं पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली ने किया। आभार प्रदर्शन श्री अतुलभाई खारा, डलास (यू.एस.ए) ने किया।

उदयपुर शिविर की पत्रिका

उदयपुर शिविर की पत्रिका

सम्पादकीय –

यदि स्वर्ग–नरक नहीं हुए तो

ह्न पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

यद्यपि आनन्दपुर एक छोटा–सा गाँव है; पर वह नदी, पहाड़ों के बीच प्राकृतिक सम्पदा से युक्त होने से एक पर्यटक केन्द्र तो बन ही गया, धर्मस्थल भी बन गया। वहाँ गाँव के निकट कल–कल शब्द करती एक नदी बहती है, जो कभी सूखती नहीं है, जिसकी धारा कभी टूटती नहीं है। गाँव के चारों ओर पहाड़ी प्रदेश है। वहाँ का सूर्यास्त दृश्य तो दर्शनीय है ही और भी अनेक प्राकृतिक झरने तथा नदी का नौका–विहार आदि भी आकर्षण के केन्द्र हैं।

विभिन्न धर्मावलम्बियों के अनेक विशालकाय मन्दिर तथा स्वास्थ्य साधना केन्द्र हैं। पर्यटक केन्द्र बनने से भोगोपभोग के भी सभी साधन उपलब्ध हो गये हैं। देशी–विदेशी यात्रियों के आवागमन से वहाँ के अधिकतम मूल निवासी एवं प्रवासी व्यापारी श्री सम्पन्न हैं।

ह्न ह्न ह्न

वहाँ एक बहत्तर वर्षीय बूढ़ी अम्मा सपरिवार रहती है, अब धर्मध्यान और स्वाध्याय करना ही उनका प्रमुख काम है। उसने पुराणों में पढ़ा कि इस मध्यलोक के अतिरिक्त पृथ्वी के नीचे अधोलोक में नरक एवं ऊपर स्वर्ग लोक हैं। नरकों में बहुत काल तक भयंकर दुःख भोगने पड़ते हैं और स्वर्गों में सभी प्रकार के सांसारिक सुख मिलते हैं। जीवों को घोर पाप के फल में नरक और सत्कर्मों के फल में स्वर्ग मिलता है। इस कारण वह बूढ़ी अम्मा खूब दान–पुण्य करती। अम्मा को धर्म–कर्म का अधिक ज्ञान तो नहीं था; पर धर्म के नाम पर व्रत–उपवास, पूजा–पाठ, जीव दया का पालन करती, शुद्ध खान–पान का पूरा ध्यान रखती और संतों का सत्संग भी करती थी।

वहीं उसी मुहल्ले में एक बावन वर्ष का व्यक्ति भी सपरिवार रहता है, जो उम्र के हिसाब से तो प्रौढ़ है; पर दुर्व्यसनों के कारण तन–मन से बूढ़े से भी अधिक गया–बीता लगने लगा है; क्योंकि पान–तम्बाखू खाने से उसके दाँत सड़ गये, बहुत तो गिर ही गये। चिन्ताओं से बाल पक गये, चेहरे पर झुरियाँ पड़ गईं। उसका इकलौता बेटा भी लगभग उसी की लाइन पर चलने लगा है, पर होटल से आजीविका अच्छी हैं; अतः परिवार पल रहा है।

वह उस बूढ़ी अम्मा की यह कहकर हँसी उड़ाया करता है कि ह्न किसने देखे नरक–स्वर्ग? यह अम्मा तो व्यर्थ ही व्रत–उपवास करके अपना शरीर सुखाया करती है। भगवान के नाम पर पत्थरों की पूजा किया करती है। आज तक किसी ने असली भगवानों को तो देखा नहीं कि ह्न वे कैसे हैं? कौन हैं? कहाँ रहते हैं? बस, पण्डितों एवं पुजारियों की पोथियों में और भक्त कवियों की किताबों में ही सब कुछ धरम–करम की चर्चायें हैं।

जब मन्दिरों में बैठे भगवानों को ही चोर चुरा ले जाते हैं और वे मूर्ति चोर पकड़े भी नहीं जाते। इस तरह जब वे स्वयं की ही रक्षा नहीं कर सकते तो वे भक्तों की क्या रक्षा करेंगे ? भगवान की पूजा करने वाले पण्डे–पुजारी एवं पण्डित स्वयं परेशान रहते हैं। दान–दक्षिणा से अपना पेट पालते हैं और उन्हें न माननेवाले नास्तिक मौज करते हमने अपनी आँखों देखे हैं।''

ह्न ह्न ह्न

जब वह तन–मन से बूढ़ा ५२ वर्षीय बीमार व्यक्ति ऐसी बातें करते हुए बीच–बीच में खाँसी से हाँपने लगता, खाँसते–खाँसते खून की उल्टी करने लगता, पेट पकड़ कर बैठ जाता तब उसका हाल देखकर उससे २० वर्ष बड़ी अम्मा उसे डाँटती–फटकारती हुई करुणाभरे स्वर में कहती ह्न अरे भले मानस ! तूने जवानी के जोश में होश खोकर मौज–मस्ती के नाम पर जो कु–कर्म किए, उसका नतीजा तेरे सामने है। अब तो तेरा बेटा भी तेरी राह पर चलने लगा है।

तू कहता है ह्न किसने देखे नरक–स्वर्ग ? किसने देखे असली भगवान ?

बेटा! यद्यपि मैं अधिक पढ़ी–लिखी नहीं हूँ; परन्तु काम चलाऊ पुराण–वगैरह तो पढ़ ही लेती हूँ, मैं जितना पढ़ती हूँ उसका सार भी मुझे समझ में आ जाता है। सौभाग्य से इतनी समझ मुझमें है कि जिससे यह पता तो चल ही जाता है कि पापी नरक में कैसे–कैसे दुःख पाते हैं और पुण्यात्मा स्वर्ग में कैसे सुखी रहते हैं और धर्मात्माओं को वीतराग मार्ग पर चलने से मुक्ति मिलती है।

मैं मुक्ति के लायक धर्म का पुरुषार्थ तो अभी नहीं कर पा रही हूँ; पर मुक्ति पाने के प्रयत्न में जो व्रत–उपवास, पूजा–पाठ आदि के जो शुभभाव होते हैं, उनके निमित्त से पापों से तो बची ही रहती हूँ। स्वर्ग के लायक पुण्य भी बंध ही जाता है। बेटा! तू अपनी सोच! तेरी ऐसी हालत में तेरा शेष जीवन भी कैसे कटेगा ?

तू कहता है ह्न किसने देखे नरक–स्वर्ग? खाओ, पियो और मौज करो; पर अफसोस तो यही है कि तूने मौज–मस्ती भी कहाँ कर पायी? बीड़ी–सिगरेट से फेंफड़े खराब कर लिए, मदिरा–माँस से आतें सड़ा–गला लीं, जुआ आदि दुर्व्यसनों से इज्जत–आबरू गमा दी, झूठ, चोरी, कुशील से पत्नी–पुत्र–परिवार का विश्वास और स्नेह खो दिया। तुझे देख तेरा बेटा भी बिगड़ रहा है। अब तू 'न घर का रहा न घाट का।' कुत्ते के मौत मरने जैसी तेरी हालत हो गई है। क्या इसे ही मौज–मस्ती से जीना कहते हैं?

अरे ! तेरी मान्यता अनुसार ही सही। मानो स्वर्ग नरक न भी हुए तो मेरा क्या बिगड़ा? संयम से रही, शुद्ध खान–पान रखा, भले काम करने से चित्त प्रसन्न रहा, निश्चिन्त और संतुष्ट रही; अतः ७२ वर्ष की उम्र में भी तन्दुरुस्त हूँ।

मैं तो किसी भी तरह घाटे में नहीं हूँ, चाहे नरक–स्वर्ग हों या न हों; यदि होंगे तो मुझे तो निश्चित स्वर्ग ही मिलेगा; क्योंकि मैंने नरक जाने जैसे पाप तो किए ही नहीं; परन्तु कदाचित् नरक–स्वर्ग हुए तो तेरा क्या होगा? अपनी सोच ! तूने तो नरकों के अस्तित्व से इन्कार कर निर्भयता से स्वच्छन्द होकर जो दुर्व्यसन सेवन किए उनसे वर्तमान जीवन को ही भरी जवानी में यही नरक बना लिया है।

ओ बेटा! और सुन! इस जीवन में कोई एक हत्या करता है तो उसे एक बार फाँसी अर्थात् मृत्युदण्ड दिया जाता है। ऐसी स्थिति में यदि कोई दिन में हजारों हत्यायें करता हो तो उसे हजार बार मृत्युदण्ड मिलना चाहिए, जो इस जीवन में संभव नहीं है, अतः एक ऐसा स्थान भी होना ही चाहिए, जहाँ अनेक हत्याओं के बदले में अनेक बार मृत्युदण्ड का दुःख भोगना पड़े? बस उसी स्थान का नाम नरक है। उन नरकों में नारकी परस्पर में ऐसी कषाय करते हुए लड़ते हैं कि एक–दूसरे के शरीर के तिल–तिल के बराबर टुकड़े कर देते हैं, जिससे दुःख तो मरण तुल्य होता है; पर मरता नहीं है, पारस की भाँति वह शरीर फिर जुड़ जाता है।

और जो तू यह कहता है कि ह्न मैंने पत्थर पूजे सो तेरा यह मानना सर्वथा मिथ्या है। यद्यपि मैं अधिक पढ़ी–लिखी नहीं हूँ, पर इतना तो मैंने ज्ञानी संतों के समागम से समझ ही लिया है कि ह्न हम इन मूर्तियों के माध्यम से उन मूर्तिमान वीतरागी सर्वज्ञ परमात्माओं की पूजा, स्तवन एवं गुणगान करते हैं, जो स्वयं पतित से पावन गये हैं और हमें पतित से पावन बनने का मार्ग बता गये हैं। इस कारण हम भी एक दिन उन्हीं के बताये मार्ग पर चल कर परमात्मा बन जायेंगे, मुक्ति प्राप्त कर लेंगे। (शेष पृष्ठ – 8 पर...)

श्री गुरुदत्त कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट द्रोणगिरि द्वारा आयोजित

श्री महावीरस्वामी पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव

(मंगलवार, दिनांक 05 फरवरी से सोमवार, 11 फरवरी, 2008 तक)

प्रतिष्ठाचार्य

बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री, सनावद

*

सह-प्रतिष्ठाचार्य

पं. धन्यकुमारजी बेलोकर, गजपंथ
पं. मधुकरजी जैन, जलगाँव
पं. ऋषभजी शास्त्री, छिन्दवाड़ा
पं. अजितजी शास्त्री, अलवर
पं. सुबोधजी शास्त्री, शाहगढ़

भक्ति–ज्ञान–वैराग्य की त्रिवेणी में मंगल अवगाहन हेतु सभी साधर्मी भाईयों को सादर आमंत्रण !

मंगल आमंत्रण

सिद्धक्षेत्र श्री द्रोणगिरि में सिद्धायतन रचना सुखकार।
श्री जिनमंदिर, समवशरण अरु मानस्तम्भ अतिमनहार।।
सिद्धायतन के प्राङ्गण में है महामहोत्सव मङ्गलकार।
भविजन सब सहभागी होकर भोगेंगे आनन्द अपार।।1।।
पाँच फरवरी के मंगल दिन से होगा उत्सव का आरम्भ।
ग्यारह फरवरी को हम पधरायें इकतालीस जिनबिम्ब।।
वीर जिनेश्वर का है पञ्चकल्याणक उत्सव महा महान।
जिनशासन की अतिशय महिमा भविजन गायें जिन गुणगान।।2।।
समवशरण में वीर प्रभु की दिव्यध्वनि झेलें गणधर।
तीन केवली अरु श्रुत केवली पाँच चरण शोभें मनहर।।
अष्टादश जिनवाणी शोभें जिनमें द्वादशांग का सार।
श्रुतस्कन्ध अरु तीनलोक की रचना भी है अति मनहार।।3।।
सीमन्धर सुत कुन्दकुन्द के लघुनन्दन श्री गुरु कहान।
शुद्धातम रस बरसाती जिनकी वाणी अति महिमावान।।
स्वर्णिम कलशों से शोभित होगा जब जिनमंदिर अभिराम।
उन्नत शिखरों पर लहरायें जिनशासन ध्वज शोभावान।।4।।
सभी मुमुक्षुगण भेज रहे हैं नेह निमंत्रण मंगलकार।
इष्टमित्र सह सपरिवार तुम सिद्धायतन को करो विहार।।
सभी व्यवस्थाऐं हरसम्भव उत्तम होंगी पूर्ण प्रयास।
मानो साक्षात् तीर्थंकर नगरी में हों ह्न यह आभास।।5।।
हार्दिक आमंत्रण अहो, साधर्मी गुणखान।
आवश्यक शुभ आगमन, उत्सव महिमावान।।

विद्वत्सान्निध्य

तार्किक विद्वान तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, जयपुर

डॉ. उत्तमचन्दजी जैन, सिवनी
पं. पूनमचन्दजी छाबड़ा, इन्दौर
पं. राजेन्द्रकुमारजी जैन, जबलपुर
ब्र. सुमतप्रकाशजी, खनियांधाना
पं. प्रदीपजी झांझरी, उज्जैन

संपर्क सूत्र :

* मस्ताई प्रेमचंद जैन
मंत्री, ट्रस्ट कमेटी,
सिद्धायतन द्रोणगिरि,
तह. बड़ामलहरा, छतरपुर (म.प्र.)
मोबाईल : 09425305708

* पण्डित अभयकुमार शास्त्री
महामंत्री, प्रतिष्ठा महोत्सव समिति,
17, कहान नगर सोसायटी,
देवलाली, नाशिक (महा.)
मोबाईल : 09420225393

आवास की व्यवस्था हेतु आवश्यक सूचना

पंचकल्याणक समिति द्वारा द्रोणगिरि में 500 लोगों की एवं वहाँ से 7 किलोमीटर दूर बड़ामलहरा में और 22 किलोमीटर दूर घुवारा में 1500–1500 लोगों के आवास की व्यवस्था की जा रही है। इसप्रकार 3500 लोगों की व्यवस्था के अलावा 1000 लोगों की व्यवस्था हेतु महोत्सव स्थल पर सर्व सुविधा युक्त टैन्ट लगाये जा रहे हैं।

इसके अतिरिक्त द्रोणगिरि से 55 किलोमीटर दूर छतरपुर में अच्छे होटल भी 200 से 1500 रुपये प्रतिदिन के खर्च पर उपलब्ध हैं। टैन्टों एवं होटल की विस्तृत जानकारी तथा आवास हेतु रजिस्ट्रेशन फार्म आगामी अंक में प्रकाशित किया जा रहा है ।

उपलब्ध आवास की व्यवस्था भी पहले आओ पहले पाओ के आधार से की जा सकेगी; अत: महोत्सव में आनेवाले लोग समय रहते आवास की बुकिंग सुनिश्चित करा लेवें, ताकि ऐन वक्त पर असुविधा से बचा जा सके।

* निवेदक *

श्री महावीरस्वामी दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव समिति,
सिद्धायतन–द्रोणगिरि छतरपुर (म.प्र.)

उदयपुर शिविर की पत्रिका

उदयपुर शिविर की पत्रिका

2 दिसम्बर 2007, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

शिविर सानन्द सम्पन्न

विदिशा (म. प्र.) : यहाँ श्री शीतलनाथ दिगम्बर जैन बड़े मंदिर में श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन एवं मंदिर ट्रस्ट विदिशा के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 14 से 19 अक्टूबर, 07 तक आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी, पण्डित ज्ञानचंदजी सोनागिर, पण्डित विमलचंदजी झांझरी उज्जैन, ब्र. हेमचंदजी हेम देवलाली, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी उज्जैन, पण्डित संजयजी शास्त्री अलीगढ़, पण्डित तेजकुमारजी गंगवाल इंदौर, पण्डित अरहंतप्रकाशजी झांझरी उज्जैन, पण्डित बाबूभाई मेहता फतेपुर, पण्डित नागेशजी पिड़ावा, पण्डित शांतिलालजी महिदपुर, पण्डित मधुकरजी जलगांव, श्रीमती हीराबाईजी इन्दौर, ब्र. सुकुमालजी, ब्र. पुष्पलताजी, ब्र. ज्ञानधाराजी, ब्र.समताजी झांझरी उज्जैन के साथ ही स्थानीय विद्वान पण्डित जवाहरलालजी, पण्डित कस्तूरचंदजी, पण्डित शिखरचंदजी, पण्डित लालजीरामजी, पण्डित नंदकिशोरजी, डॉ. आर. के. जैन, ब्र. अमितजी मोदी, डॉ. विनोद चिन्मय, डॉ. मुकेश तन्मय, डॉ. विद्यानंदजी, डॉ. सरस जैन, डॉ. राजेशजी शास्त्री के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ।

शिविर में प्रतिदिन प्रात: श्री जिनेन्द्र अभिषेक, नित्य-नियम पूजन एवं पंच परमेष्ठी विधान तथा गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन के पश्चात् तीनों समय आगन्तुक विद्वानों द्वारा दो-दो प्रवचन एवं शिक्षण कक्षायें ली गयी।

शिविर का उद्घाटन श्री रतिलाल कंदमसी गंगड़ दहीसर, मुंबई द्वारा श्री महेन्द्रकुमारजी सागर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। अंतिम दिन श्री शीतलनाथ स्वामी के मोक्षकल्याणक के अवसर पर भद्दलपुर उदयगिरि में पूजन, प्रवचन एवं महामस्तकाभिषेक का कार्यक्रम रखा गया। शिविर में 700 से अधिक साधर्मीजनों ने धर्मलाभ लिया। ह्न **मलूकचंद जैन, अध्यक्ष**

(पृष्ठ - 4 का शेष ...)

तब वह बोला..अम्मा ! तेरा मानना और कहना शत-प्रतिशत सही है। मैं ही अब तक मार्ग भटका हुआ था। अब मेरी समझ में अच्छी तरह आ गया है कि निःसंदेह नरक-स्वर्ग हैं? जीवों का पूर्वजन्म पुनर्जन्म होता है।

स्लिपडिस्क रोगी ध्यान दें !

सम्पूर्ण उपचार बिना दवा, बिना कसरत, बिना चीरफाड, बिना आराम किए विश्व की नवीनतम तकनीक माइक्रो एक्यूप्रेशर द्वारा शीघ्र उपचार।

डॉ. पीयूष त्रिवेदी (मो.) 09828011871

गोल्ड मेडलिस्ट, बी.ए. एम.एस., एम.डी. (एक्यू.)

डिप्लोमा इन योगा, सुजोक (मास्को) एफ.ए.आर.सी. एस. (लंदन)

मेडिनोवा पोली क्लीनिक, केसरगढ, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर

समय : सायं 6 बजे से 9 बजे तक, रविवार को प्रात: 8 से 12 बजे तक

नोट-एक्यूप्रेशर सेवा समिति द्वारा 300 से अधिक नि:शुल्क शिविर आयोजित।

अन्य रोग : जोडों का दर्द, गर्दन का दर्द, मोटापा, मायोपैथी, मानस विकृतियां, मधुमेह तथा उच्च रक्तचाप आदि की सफल चिकित्सा।

वैराग्य समाचार

कोटा निवासी श्री अरिदमनलालजी जैन का दिनांक 6 नवम्बर, 07 को 85 वर्ष की आयु में शांत परिणामों से देहावसान हो गया है। आप लगभग 35 वर्षों तक दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल कोटा के अध्यक्ष रहे। आप तत्त्व के लिये समर्पित सक्रिय कार्यकर्ता के साथ-साथ गहन तत्त्वाभ्यासी भी थे। देहावसान के पूर्व आपको घर पर ही आदरणीय जुगलकिशोरजी 'युगल' का मार्मिक उद्बोधन भी प्राप्त हुआ। आपके निधन से मुमुक्षु समाज कोटा को एक अपूरणीय क्षति हुई है।

आपकी स्मृति में आपके परिवार की ओर से जैनपथप्रदर्शक, वीतराग-विज्ञान एवं टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को कुल 1001/-रुपये प्राप्त हुये हैं; एतदर्थ धन्यवाद !

दिवंगत आत्मा शीघ्र ही निर्वाण को प्राप्त हो ह्न यही भावना है।

सत्साहित्य नि:शुल्क मंगायें

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा लिखित प्रवचनसार अनुशीलन भाग-1, पृष्ठ-446, कीमत-30 रुपये और प्रवचनसार अनुशीलन भाग-2, पृष्ठ-475, कीमत-35 रुपये; का नि:शुल्क वितरण स्व. प्रफुल्लचंद केशवलाल दोशी की स्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती नलिनी प्रफुल्लचंद दोशी एवं उनके सुपुत्र श्री संजयभाई दोशी एवं रूपेनभाई दोशी परिवार की ओर से साधर्मीभाई-बहिनों, ब्रह्मचारियों, त्यागियों, मंदिरों, वाचनालयों हेतु किया जा रहा है।

इच्छुक महानुभव 15/- रुपये के फ्रेश डाक टिकिट निम्नलिखित पते पर भेजकर पुस्तकें मंगा लेवें। ध्यान रहे टिकिट भेजने की अंतिम तारीख **31 दिसम्बर 2007** है। ह्न नि:शुल्क साहित्य वितरण विभाग

श्री टोडरमल स्मारक भवन

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- ४ बापूनगर, जयपुर - ३०२०१५ (राज.)
फोन : (०१४१) २७०५५८१, २७०७४५८
फैक्स : (०१४१) २७०४१२७